## अखिल सिंह

अगर ख्वाब उनके सजाने लगेंगे
तो खुद अपने दिल को दुखाने लगेंगे।

ये जो ख़्वाब उनके सजाने लगे हैं
कभी ना कभी सब ठिकाने लगेंगे।

मुझे भूलने की जो कोशिश करोगे
कसम से बहुत याद आने लगेंगे।

के मिलने में कुछ इक महीने लगे थे
बिछड़ने में कुछ इक ज़माने लगेंगे।

हमारी तरह दिन गुजरने लगें तो
गज़ल आप भी गुनगुनाने लगेंगे।

## सत्यवान सत्य

देखे हैं जब से आब में हँसते हुए कँवल।
आने लगे हैं ख़्वाब में हँसते हुए कँवल।

ऐसे हैं सुर्ख़ होठ गुलाबी से अक्स पर
रक्खे हैं ज्यों गुलाब में हँसते हुए कँवल।

आँखें ख़ुमार से भरी साक़ी की देखकर
दिखने लगे शराब में हँसते हुए कँवल।

जब से हुआ है इश्क़ हमें इक हसीन से
दिखते हैं हर शबाब में हँसते हुए कँवल।

उस वक़्त इक ख़ुमार सा महफ़िल पे छा गया
जब आ गए नक़ाब में हँसते हुए कँवल।

भेजे थे लब से चूम के जितने भी मेरे पास
वो मिल गए किताब में हँसते हुए कँवल।


ISSN:2583-8849